Divya Astra Siddhi

पशुपतास्त्र, ब्रह्मास्त्र, नारायणास्त्र, अघोरास्त्र, सुदर्शनचक्रास्त्र, आग्नेयास्त्र, यमास्त्र, बगलास्त्र

Gurudev Raj Verma

Contact- +91-9897507933,+91-7500292413(WhatsApp No.)

Email- mahakalshakti@gmail.com

For more info visit---

www.scribd.com/mahakalshakti

www.gurudevrajverma.com

दिव्यास्त्रों में देवताओं की विराट शक्तियां स्थापित होती हैं। असुरों एवं दुष्टजनों का वध, भक्तजनों की सुरक्षा एवं प्रलय के समय सृष्टि का विनाश इन्हीं दिव्यास्त्रों के द्वारा होता है। शिवपुराण में महादेव कहते हैं- सृष्टि, पालन, संहार, तिरोभाव और अनुग्रह- ये मेरे जगत् सम्बन्धी पांच कार्य हैं, जो नित्यसिद्ध हैं। दिव्यास्त्र एवं आयुधों में देवताओं की असीमित ऊर्जा प्रतिष्ठित होती है इसलिये देवपूजन में उनके साथ उनके मुख्य अस्त्रों का भी पूजनार्चन किया जाता है। दिव्यास्त्रों का स्वभाव आक्रामक एवं संहारकारी होता है। अतः उग्र अस्त्रों को सिद्ध करने से पूर्व देवता को प्रसन्न कर उनकी अनुमति लेना अनिवार्य हो जाता है। जैसे सर्वप्रथम उनकी गायत्री या मूल मंत्र के विशेष संख्या में जप करना, अस्त्र सिद्धि के समय नित्य शांति पाठ, तर्पण, दुग्धाभिषेक एवं सात्विक बलि कर्म को सम्पादित करना आदि। अन्य गुप्त एवं आवश्यक विधान समर्थ गुरु की सेवा कर उनसे प्राप्त करना चाहिये। मनुष्य अपनी सूझबूझ से अस्त्रों का आवाहन एवं प्रकट करने का प्रयास कदापि न करे (जिन अस्त्रों में प्रकट का उच्चारण है)। अन्यथा लाभ के स्थान पर हानि सम्भव है। दुरुपयोग या साधक के

समक्ष कोई संकट उत्पन्न न हो इसी भय से सम्पूर्ण विधि प्रस्तुत नहीं की जा रही है। सभी अस्त्रों को अत्यन्त सावधानी पूर्वक देवता की प्रीति के अनुसार ही सिद्ध करना चाहिये। कार्य एवं परिस्थितिनुसार ही अस्त्रमंत्र का चुनाव किया जाता है। यदि संक्षेप में कहा जाये तो एक उच्चकोटि साधक, श्रेष्ठ गुरु के सरंक्षण में अस्त्रों का आवाहन व जप कर उनके दर्शन करने का सौभाग्य प्राप्त कर सकता है।

सत्ययुग अस्त्रों का युग था। इन्हीं दिव्यास्त्रों के बल पर महायुद्धों का निर्णय होता था। दिव्यास्त्रधारी मनुष्य विश्वविजयी कहलाता था। अर्जुन ने श्रीकृष्ण के मार्गदर्शन से पशुपतास्त्र एवं स्वर्गलोक से 15 दिव्यास्त्रों को प्रयोग, उपसंहार, आवृत्ति, प्रायश्चित और प्रतिघात- इन पांचों विधियों सहित प्राप्त किया था। जिससे पाण्डवों को विजयश्री प्राप्त हुई थी। अर्जुन के अतिरिक्त अश्वत्थामा, पितामह भीष्म, रावण, मेघनाद, कर्ण, द्रोणाचार्य आदि कई तपस्वी दिव्यास्त्रों के ज्ञाता माने जाते थे।

यदि अनुचित रीति से अंहकार के साथ इनका अनुष्ठान किया जाये तो ये भय के कारण बन जाते हैं। जैसे- मैं जप करुंगा, मैं यज्ञ करुंगा, मैं सिद्धि प्राप्त कर लूंगा, मेरी यह प्रतिज्ञा है- इस तरह की बातें अभिमानपूर्वक हैं। इस अहं भाव का

परित्याग ही श्रेयस्कर है, क्योंकि मनुष्य में परम पुरुषार्थ होने पर भी जब तक उस पर दैवीय कृपा नहीं होगी, तब तक वह मनुष्य महाज्ञान सम्पन्न होने पर भी उनका जप-तप नहीं कर पायेगा।

दिव्यास्त्रों के जप से मुख्य लाभ :- जिस स्थान पर अस्त्र का नित्य जप होता है, वह स्थान और मनुष्य सर्व तंत्र बाधाओं से विमुक्त रहता है।

अस्त्र द्वारा अभिमंत्रित जल पीने से समस्त शारीरिक रोग विनष्ट होते हैं, अज्ञान का नाश होकर ज्ञान का उदय होता है, ग्रहदोष शान्त होते हैं, अकाल मृत्यु, दुर्घटना से रक्षा होती है और मनुष्य दीर्घायु प्राप्त करता है।

भूमि में जहां पर निधि (खजाना) हो, अस्त्र के प्रभाव से उस स्थान पर निवासित भूत, वेताल एवं अन्य सर्प शक्तियां उस स्थान को छोड़कर पलायन कर जाती हैं। बलि आदि की मांग नहीं करती।

दुष्ट शत्रुओं का भय होने पर अस्त्र का विधिवत प्रयोग किया जाये तो दिव्यास्त्र शत्रुओं को दण्डित करते हैं जिससे शत्रुबाधा का निवारण होता है। दिव्यास्त्र की सम्पूर्ण सिद्धि होने पर वह

अस्त्र मनुष्य की आजीवन रक्षा करता है और मरणोपरान्त् मनुष्य देवलोक को प्राप्त करता है।

नारायणास्त्र के प्रयोग से दरिद्रता एवं दुर्भाग्य से अति शीघ्र मुक्ति मिलती है। यदि शांतिपूर्वक एक लाख की संख्या में इस अस्त्र को सिद्ध कर लिया जाये तो तेज, आयु, कीर्ति, धन, यश इन सभी पर मनुष्य अधिकार प्राप्त कर लेता है।

अस्त्रों की सिद्धि करते समय स्वप्न में या साधना समय में देवता के साथ अस्त्रों के तेजस्वी (क्षणिक) दर्शन होते हैं। कुछ साधकों को जपकाल के समय देवप्रतिमा में उनके अस्त्रशस्त्र हिलते हुए दिखायी दिये जाने का अनुभव है।

बिना योग्यता, परीक्षा, पुरुषार्थ, भाग्य एवं मार्गदर्शन के मनुष्य इस मृत्युलोक की भी कोई वस्तु सिद्ध नहीं कर सकता। देवलोक के अस्त्र-शस्त्रों के दर्शन या सिद्धिकरण की बात तो बहुत दूर की है। इस बात को सदैव स्मरण रखना चाहिये।

श्रीब्रह्मास्त्र प्रकट मंत्र :- 'ॐ नमो ब्रह्माय नमः। स्मरण-मात्रेण प्रकटय-प्रकटय, शीघ्रं आगच्छ-आगच्छ, मम सर्व शत्रुं

नाशय-नाशय, शत्रु सैन्यं नाशय-नाशय, घातय-घातय, मारय-मारय हुं फट्।'

श्रीआग्नेयास्त्र प्रकट मंत्र :- 'ॐ नमो अग्निदेवाय नमः। शीघ्रं आगच्छ-आगच्छ मम शत्रुं ज्वालय-ज्वालय, नाशय-नाशय हुं फट्।'

श्रीअघोरास्त्र-मंत्र :- 'ॐ ह्रीं स्फुर-स्फुर प्रस्फुर-प्रस्फुर घोर-घोर-तर तनुरूप चट-चट प्रचट-प्रचट कह-कह वम-वम बन्ध-बन्ध घातय-घातय हुं फट्।'

श्रीपशुपतास्त्र मंत्र :- 'ॐ श्लीं पशु हुं फट्।'

श्रीपशुपतास्त्र प्रकट मंत्र :- 'ॐ नमो पाशुपतास्त्र! स्मरण मात्रेण प्रकटय-प्रकटय, शीघ्रं आगच्छ-आगच्छ, मम सर्व शत्रुसैन्यं विध्वंसय-विध्वंसय, मारय-मारय हुं फट्।'

श्रीयमास्त्र प्रकट मंत्र :- 'ॐ नमो यमदेवताय नमः। स्मरण मात्रेण प्रकटय-प्रकटय। अमुकं शीघ्रं मृत्युं हुं फट्।'

श्रीसुदर्शन चक्र मंत्र :- 'ॐ नमो भगवते सुदर्शनाय भो भो सुदर्शन दुष्टं दारय-दारय दुरितं हन-हन पापं दह-दह, रोगं मर्दय-मर्दय, आरोग्यं कुरु-कुरु, ॐ ॐ ह्रां ह्रां ह्रीं ह्रीं ह्रूं ह्रूं फट् फट् दह-दह हन-हन भीषय-भीषय स्वाहा।'

श्रीसुदर्शनचक्रास्त्र प्रकट मंत्र :- 'ॐ नमो सुदर्शनचक्राय, महाचक्राय, शीघ्रं आगच्छ-आगच्छ, प्रकटय-प्रकटय, मम शत्रुं काटय-काटय, मारय-मारय, ज्वालय-ज्वालय, विध्वंसय-विध्वंसय, छेदय-छेदय, मम सर्वत्र रक्षय-रक्षय हुं फट्।'

श्रीनारायणास्त्र मंत्र :- 'हरिः ॐ नमो भगवते श्रीनारायणाय नमो नारायणाय विश्वमूर्तये नमः श्री पुरुषोत्तमाय पुष्पदृष्टिं प्रत्यक्षं वा परोक्षं वा अजीर्णं पंचविषूचिकां हन-हन ऐकाहिकं द्व्याहिकं त्र्याहिकं चातुर्थिकं ज्वरं नाशय-नाशय चतुरशीतिवातानष्टादशकुष्ठान् अष्टादशक्षय रोगान् हन-हन सर्वदोषान् भंजय-भंजय तत्सर्वं नाशय-नाशय शोषय-शोषय आकर्षय-आकर्षय शत्रून-शत्रून मारय-मारय उच्चाटयोच्चाटय विद्वेषय-विद्वेषय स्तम्भय-स्तम्भय निवारय-निवारय विघ्नैर्हन-विघ्नैर्हन दह-दह मथ-मथ विध्वंसय-विध्वंसय चक्रं गृहीत्वा शीघ्रमागच्छागच्छ चक्रेण हत्वा परविद्यां छेदय-छेदय भेदय-भेदय चतुःशीतानि विस्फोटय-विस्फोटय अर्शवातशूलदृष्टि सर्पसिंहव्याघ्र द्विपदचतुष्पद-पद-बाह्यान्दिवि भुव्यन्तरिक्षे अन्येऽपि केचित् तान्द्वेषकान्सर्वान् हन-हन विद्युन्मेघनदी-पर्वताटवी-सर्वस्थान रात्रिदिनपथचौरान् वशं कुरु-कुरु हरिः ॐ नमो भगवते ह्रीं हुं फट् स्वाहा ठः ठं ठं ठः नमः।'

श्रीबगलामुखी पंचास्त्र विद्या मंत्र- भगवती बगलामुखी के पांच विशेष उग्र मंत्रों को बगला पंचास्त्र कहते हैं।

वडवामुखी मंत्र :- 'ॐ ह्लीं हूं ग्लौं बगलामुखि ह्लां ह्लीं ह्लूं सर्वदुष्टानां ह्लैं ह्लौं ह्लः वाचं मुखं पदं स्तंभय ह्लः ह्लौं ह्लैं जिह्वां कीलय ह्लूं ह्लीं ह्लां बुद्धिं विनाशय ग्लौं हूं ह्लीं हुं फट्।'

उल्कामुखी मंत्र :- 'ॐ ह्लीं ग्लौं बगलामुखि ॐ ह्लीं ग्लौं सर्वदुष्टानां ॐ ह्लीं ग्लौं वाचं मुखं पदं ॐ ह्लीं ग्लौं स्तंभय-स्तंभय ॐ ह्लीं ग्लौं जिह्वां कीलय ॐ ह्लीं ग्लौं बुद्धिं विनाशय ह्लीं ॐ ग्लौं ह्लीं ॐ स्वाहा।'

जातवेदमुखी मंत्र :- 'ॐ ह्लीं ह्सौं ह्लीं ॐ बगलामुखि सर्वदुष्टानां ॐ ह्लीं ह्सौं ह्लीं ॐ वाचं मुखं पदं स्तंभय-स्तंभय ॐ ह्लीं ह्सौं ह्लीं ॐ जिह्वां कीलय ॐ ह्लीं ह्सौं ह्लीं ॐ बुद्धिं विनाशय-विनाशय ॐ ह्लीं ह्सौं ह्लीं ॐ स्वाहा।'

ज्वालामुखी मंत्र :- 'ॐ ह्लीं रां रीं रूं रैं रौं प्रस्फुर-प्रस्फुर ज्वालामुखि ॐ ह्लीं रां रीं रूं रैं रौं प्रस्फुर-प्रस्फुर सर्वदुष्टानां ॐ ह्लीं रां रीं रूं रैं रौं प्रस्फुर-प्रस्फुर वाचं मुखं पदं स्तंभय-स्तंभय ॐ ह्लीं रां रीं रूं रैं रौं प्रस्फुर-प्रस्फुर जिह्वां

कीलय-कीलय ॐ ह्लीं रां रीं रूं रैं रौं प्रस्फुर-प्रस्फुर बुद्धिं विनाशय-विनाशय ॐ ह्लीं रां रीं रूं रैं रौं प्रस्फुर-प्रस्फुर स्वाहा।'

वृहद्भानुमुखी मंत्र :- 'ॐ ह्लां ह्लीं ह्लूं ह्लैं ह्लौं ह्लः ह्लां ह्लीं ह्लूं ह्लैं ह्लौं ह्लः ॐ बगलामुखि ॐ ह्लां ह्लीं ह्लूं ह्लैं ह्लौं ह्लः ह्लां ह्लीं ह्लूं ह्लैं ह्लौं ह्लः ॐ सर्वदुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तंभय ॐ ह्लां ह्लीं ह्लूं ह्लैं ह्लौं ह्लः ह्लां ह्लीं ह्लूं ह्लैं ह्लौं ह्लः ॐ जिह्वां कीलय ॐ ह्लां ह्लीं ह्लूं ह्लैं ह्लौं ह्लः ह्लां ह्लीं ह्लूं ह्लैं ह्लौं ह्लः ॐ बुद्धिं विनाशय ॐ ह्लां ह्लीं ह्लूं ह्लैं ह्लौं ह्लः ह्लां ह्लीं ह्लूं ह्लैं ह्लौं ह्लः ॐ ह्लीं ॐ स्वाहा।'

Books Written by Gurudev Shri Raj Verma ji

- Divya Mantra Sadhana Evam Siddhi

- Shri Baglamukhi Divya Sadhana